REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X

VOLUME - 8 | ISSUE - 6 | MARCH - 2019

मूल्यपरक शिक्षा में शिक्षक की भूमिका

Bhundiya Dipti Narendrabhai
M.A., M.A. in Education, B.Ed.
Primary Teacher , Degavada Primary School , Ta. Mahuva, Dist. Bhavnagar.

सारांश

मूल्यपरक शिक्षा जो किसी समाज एवं देश के चहुँमुखी विकास का आधार है इसको आगे बढ़ाने के लिए शिक्षक वर्ग को आगे आना होगा। इससे मूल्य आधारित शिक्षा के दिव्यत्व से प्रेरित ऐसे मानवों का निर्माण होगा जो आचारवान, समाज सेवी, राष्ट्रभक्ति की भावना से ओत–प्रोत एवं शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, भावनात्मक एवं आध्यात्मिक दृष्टि से पूर्ण विकसित हो। मूल्याधारित शिक्षा के अभाव में, समाज के हिंसक होने और समाज की आधारभूत संस्थाओं जैसे परिवार विवाह आदि के टूटने, भ्रष्टाचार के बढ़ने तथा चरित्र पतन होने से समाज में सुख–शान्ति का समावेष नहीं हो सकता है। यही कारण है कि देश की भौतिक प्रगति होने के बावजूद भी देश को अराजकता की स्थिति से गुजरना पड़ रहा है। अतः शिक्षा के माध्यम से शिक्षकों द्वारा यह प्रयास किया जाना चाहिए कि वांछित उच्चतम मूल्यों का विकास हो सके और यह तभी संभव है जब शिक्षक में स्वयं व्यक्तिगत मूल्यों का समावेश हों ।

कूट शब्द : शिक्षक, मूल्यपरक शिक्षा, व्यक्तिगत मूल्य.

प्रस्तावना

शिक्षा समाज का दर्पण है और मूल्य उसके प्रतिबिम्ब। समाज में प्रचलित मूल्य शिक्षा को आधार प्रदान करते हैं। यदि किसी राष्ट्र को पूरे विश्व में अपनी अच्छी पहचान बनानी हो तो उस राष्ट्र के उद्देश्य, आदर्श व मूल्यों का परिपूर्ण होना अत्यन्त आवश्यक होता है। इसके लिए शिक्षा एक ऐसा प्रभावी माध्यम है जो एक राष्ट्र के उद्देश्य, आदर्श और मूल्यों को एक आइने की तरह दर्शाता है। शिक्षा व्यवस्था में शिक्षक व छात्र दो प्रमुख घटक है जो समाज में हितकारी परिवर्तन ला सकते हैं। ये भारतीय शिक्षा व्यवस्था में नये विचार, नये दृष्टिकोण, नये मूल्यों को स्थापित कर देश के भविष्य को उज्जवल बना सकते हैं। प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन में मूल्यों के आधार पर यह निश्चित करता है कि उसे किस प्रकार से जीवन आगे बढ़ाना चाहिये क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में अपने अलग–अलग मूल्य होते हैं, और वह उसी के अनुसार अपने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में कार्य करता है।

मूल्य का अर्थ

मूल्य एक प्रकार का मानक है। मनुष्य किसी वस्तु, क्रिया या विचार को अपनाने से पूर्व यह निर्णय करता है कि वह उसे अपनाए या त्याग दे। जब ऐसा विचार भाव व्यक्ति के मन में निर्णयात्मक ढंग से आता है, तो वह मूल्य कहलाता है।

मूल्य की विशेषताएँ

मूल्यों की परिभाषा के आधार पर मूल्यों की विशेषताएँ निम्न हैं –

1. मूल्य अहम (मैं) से वयम् (हम) अर्थात् मैं से आगे परिवार, समाज, राष्ट्र विश्व तक पहुँचने के मार्ग के पथ प्रदर्शक हैं।
2. हम जिन गुणों को सामान्य व्यवहार में वरीयता देते हैं वे मूल्य हैं।
3. मूल्यों को व्यक्ति तथा समाज पाने की चेष्टा करते हैं।
4. मूल्य वे मानदण्ड है जिनके द्वारा ध्येय निर्धारित किया जाता है।
5. मूल्य वह व्यवहार है जिसके द्वारा व्यक्ति अच्छे व बुरे कर्मों की पहचान कर एक जिम्मेदार नागरिक बन सकता है।
6. मूल्य हर एक व्यक्ति को उसके कार्यों में मार्गदर्शन करते हैं तथा जो सभी परिस्थितियों में एक समान होते हैं।

प्रस्तुत अध्ययन में हमनें मूल्यपरक शिक्षा में शिक्षक की भूमिका का अध्ययन करने का प्रयास किया है।

व्यक्तिगत मूल्य

व्यक्तिगत मूल्यों में स्वावलंबन, स्वच्छता, श्रमप्रतिष्ठा, निर्भयता, विज्ञाननिष्ठा, प्राणीदया, अनुशासन प्रियता, धार्मिक विश्वास, नैतिक अभिवृत्ति, जीवन दर्शन, राजनैतिक आदर्श सम्मिलित होते हैं। व्यक्तिगत मूल्यों के अन्तर्गत 10 मूल्य सम्मिलित किये गये हैं।

(क) धार्मिक मूल्य, (ख) सामाजिक मूल्य, (ग) प्रजातांत्रिक मूल्य, (घ) सौंदर्यात्मक मूल्य, (च) आर्थिक मूल्य, (छ) ज्ञानात्मक मूल्य, (ज) आनंदपरक मूल्य (झ) शक्ति मूल्य, (ट) पारिवारिक स्तर मूल्य, (ठ) स्वास्थ्य मूल्य।

इन दस मूल्यों में से 4 मूल्य – (क) धार्मिक मूल्य, (ख) सामाजिक मूल्य, (च) आर्थिक मूल्य, (छ) ज्ञानात्मक मूल्य, को अपने अध्ययन में शामिल किया गया है।

मूल्यपरक शिक्षा में शिक्षक की भूमिका

मूल्यपरक शिक्षा जो किसी समाज एवं देश के चहुँमुखी विकास का आधार है इसको आगे बढ़ाने के लिए शिक्षक वर्ग को आगे आना होगा। इससे मूल्य आधारित शिक्षा के दिव्यत्व से प्रेरित ऐसे मानवों का निर्माण होगा जो आचारवान, समाज सेवी, राष्ट्रभक्ति की भावना से ओत–प्रोत एवं शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, भावनात्मक एवं आध्यात्मिक दृष्टि से पूर्ण विकसित हो। सृजनशीलता व कार्य के लिए प्रतिबद्धता ये अच्छे शिक्षक में होना अनिवार्य है ऐसे शिक्षक सदा विद्यार्थियों के लिए श्रद्धा व सम्मान के पात्र होते हैं। ऐसे शिक्षकों के प्रति विद्यार्थियों का विश्वास बढ़ता है। शिक्षक विद्यार्थियों को अशुभ, अवांछनीय, असामाजिक एवं उद्देश्य रहित दिशा में कदम बढ़ाने से रोक सकते हैं। शिक्षक विद्यार्थियों की सुसंस्कारित व जिम्मेदार नागरिक बनाने के लिए एक उपयुक्त वातावरण तो प्रदान करते ही हैं। साथ–साथ विद्यार्थियों को नकारात्मक वातावरण के दुष्परिणामों से भी सचेत करते हैं। शिक्षक के प्रत्येक कार्य में चाहे वह सामाजिक, राजनैतिक, आध्यात्मिक कोई भी क्यों न हो, छात्रों को उसमें राष्ट्रीय व नैतिक मूल्यों के संस्कार प्रतिबिम्बित होने चाहिए इससे छात्रों में अच्छे चरित्र का निर्माण व अच्छे संस्कारों का सृजन होगा तथा नई पीढ़ी में सत्यनिष्ठा, परोपकार, देश सेवा, कर्तव्यपरायणता आदि शाष्वत मानवीय मूल्यों का समुचित विकास होगा। शिक्षक को छात्रों का आदर्श बनने की आवश्यकता है जिसके सम्पर्क में आने से लोहा भी कुन्दन बन जाता है।

अध्ययन की आवश्यकता

मूल्य शिक्षा की आवश्यकता का अनुभव करते हुये कोठारी आयोग (1964–66) तथा 1983 में गठित बेसिक शिक्षा वर्धा योजना से लेकर राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) तक सभी आयोगों के प्रतिवेदनों और अनुशंसाओं में किसी न किसी रूप में मूल्य शिक्षा पर बल दिया है। शिक्षा आयोग ने मूल्यों के विकास में विद्यालय व शिक्षकों की भूमिका को स्पष्ट करते हुए लिखा है कि विद्यालय का वातावरण, अध्यापकों का व्यक्तित्व एवं व्यवहार तथा विद्यालय में उपलब्ध भौतिक सुविधाओ का छात्रों को मूल्योन्मुख बनाने में विशेष योगदान है। 1996 में एस. पी. चव्हाण की अध्यक्षता में गठित समिति ने भी मूल्य आधारित शिक्षा और तदनुसार पाठ्यक्रम बनाने की आवश्यकता पर जोर दिया।

अतः शिक्षा के माध्यम से शिक्षकों द्वारा यह प्रयास किया जाना चाहिए कि वांछित उच्चतम मूल्यों का विकास हो सके और यह तभी संभव है जब शिक्षक में स्वयं व्यक्तिगत मूल्य हों यह अध्ययन इसी दिशा में एक प्रयास है।

संबंधित शोध अध्ययन

मृदुला शर्मा (1995) ने ''विचारधारा मूल्य और शिक्षा के पारस्परिक संबंध'' का अध्ययन कर पाया कि, ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में विचारधारा, मूल्य और शिक्षा को रखकर इनके परस्पर संबंधों को स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है। विचारधाराओं की एक विशेषता यह होती है कि वह बहुत सारे वस्तुओं के बारे में बहुत अधिक स्पष्ट होती है। समाज अपने विशेष सामाजिक और सांस्कृतिक मूल्यों से ही जाना जाता है। ये मूल्य उस समाज के सदस्यों के जीवन में आचरण के सामाजिक सांस्कृतिक मानदण्डों के आधार पर बनते है। शिक्षा से व्यक्ति के चरित्र और व्यक्तित्व का विकास करने के अलावा उसके भौतिक कल्याण की आशा भी की जाती हैं। जीवन संबंधी विभिन्न दृष्टिकोण जैसे– भौतिकवादी, उपयोगितावादी, मानवतावादी, अलंकारिक दृष्टिकोण शिक्षा को अलग–अलग महत्व देते है। अतः विचारधारा मूल्य और शिक्षा परस्पर संबंध प्रक्रिया के अधीन है और समग्रता के साथ ही इनका अस्तित्व है। सुमित्रा सिंह (2005) ने ''सामाजिक मूल्यों संस्थाओं और परम्पराऔं पर भूमंडलीकरण का प्रभाव'' का अध्ययन कर यह पाया कि, वैश्वीकरण ने थोडे से प्रभुतासम्पंन्न एवं अति उच्च वर्ग के प्रत्येक स्तर में परिवर्तन करके सामान्य वर्ग एवं अथवा समाज के दृष्टिकोण को बदलने में बहुत हद तक सफलता दिखाई है। कम से कम जन–सामान्य के लिए भविष्य की एक ऐसी कल्पना विकसित की है। जिसके परिणाम स्वरूप कतिमय विरोधाभास तो रहेगें, परन्तु उसके अधिकतम लाभ भी संभवतः सर्वाधिक सुरक्षित रह सकेंगे।

मधु साहनी (2009) ने ''माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के मूल्यों का अध्ययन'' का अध्ययन कर यह पाया कि, सभी विद्यार्थियों के सनात्मक मूल्य सर्वोच्च एवं धार्मिक मूल्य निम्नतम है तथा कलात्मक मूल्य, शक्ति मूल्य एवे ज्ञानात्मक मूल्यों के संदर्भ में लिंग के आधार पर विभिन्नता पाई जाती हैं। गोपाल प्रसाद नायक (2009) ने ''मूल्यों के विकास में शिक्षण संस्थानों की भूमिका'' का अध्ययन कर यह पाया कि, मूल्यों सीख तथा आदर्श प्रस्तुति में घनिष्ठ संबंध है। एक बार दिखाना–सौ बार कहने के बराबर माना जाता है। शिक्षक द्वारा प्रस्तुत आदर्श प्रस्तुति से छात्रों में मूल्य में आत्मसात सहज ढंग से हो सकता है। क्योंकि बालक के अनुकरण की मनोवृत्ति जन्मजात होती हैं, इस प्रकार स्पष्ट हैं कि मूल्यों की विकास में शिक्षण संस्थानों की अहम भूमिका है।

सुमित्रा सिंह, मैथिलीरमण प्रसाद सिंह (2009) ने ''वर्तमान शिक्षा के मूल्य संकंट क्यों कारण एवं सुझाव'' का अध्ययन कर यह पाया कि, यह सर्वविदित हैं कि जब–जब मूल्यों से जुड़ने का प्रयास किसी समुदाय या समाज के व्यक्ति ने किया वह सामान्य मनुष्य की परिधि से उठकर महामानव की श्रेणी में जा पहुंचा तथा समाज एवं विश्व में नई दिशा प्राप्त की।

अध्ययन का उद्देश्य

1. बी. एड. प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित शिक्षकों के धार्मिक मूल्यों का अध्ययन करना।
2. बी. एड. प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित शिक्षकों के सामाजिक मूल्यों का अध्ययन करना।
3. बी. एड. प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित शिक्षकों के आर्थिक मूल्यों का अध्ययन करना।

4. बी. एड. प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित शिक्षकों के ज्ञानात्मक मूल्यों का अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पना

1. बी. एड. प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित शिक्षकों के धार्मिक मूल्यों में सार्थक अन्तर नहीं पाया जायेगा।
2. बी. एड. प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित शिक्षकों के सामाजिक मूल्यों में सार्थक अन्तर नहीं पाया जायेगा।
3. बी. एड. प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित शिक्षकों के आर्थिक मूल्यों में सार्थक अन्तर नहीं पाया जायेगा।
4. बी. एड. प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित शिक्षकों के ज्ञानात्मक मूल्यों में सार्थक अन्तर नहीं पाया जायेगा।

अध्ययन विधि

वैज्ञानिक विश्लेषण एवं व्याख्या के लिए वास्तविक तथ्यों की आवश्यकता होती है। उन्हें इकट्ठा करने के लिए शोधकर्ता जिस तरीकें को अपनाता है, उसे ही शोध विधि कहते हैं। प्रस्तुत अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

जनसंख्या

प्रस्तुत अध्ययन में गुजरात के जामनगर जिले के शासकीय एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों को सम्मिलित किया गया है।

परिसीमन

1. अध्ययन में क्षेत्र की दृष्टि से गुजरात के जामनगर शहर का चुनाव किया गया है।
2. अध्ययन हेतु हिन्दी माध्यम के 20 शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों का चयन किया गया है।
3. यह अध्ययन इन विद्यालयों के शिक्षकों तक सीमित है।
4. इन विद्यालयों से 50 बी. एड. प्रशिक्षित एवं 50 बी. एड. अप्रशिक्षित शिक्षकों का चयन किया गया है।

न्यादर्श एवं न्यादर्श चयन प्रक्रिया

प्रस्तुत अध्ययन में गुजरात के जामनगर शहर के शासकीय एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों में से 50 बी. एड. प्रशिक्षित एवं 50 बी. एड. अप्रशिक्षित शिक्षकों का चयन उद्देश्यपूर्ण विधि के द्वारा किया गया है।

अध्ययन में प्रस्तुत उपकरण

प्रस्तुत अध्ययन में बी. एड. प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित शिक्षकों के व्यक्तित्व मूल्यों के अध्ययन हेतु डॉ. जी. पी. शैरी एवं डॉ. आर. पी. वर्मा द्वारा निर्मित व्यक्तिगत मूल्य प्रश्नावली का उपयोग किया गया है।

प्रदत्तों का विश्लेषण

अध्ययन में कुल 100 शिक्षक के प्रदत्त लिये गये हैं। जिसमें 50 शिक्षक बी. एड. प्रशिक्षित एवं 50 बी. एड. अप्रशिक्षित है। बी. एड. प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित शिक्षकों द्वारा प्राप्त प्रदत्तों को पाँच स्तरों A,B,C,D,E में विभाजित किया गया है।

तालिका क्रमांक 1.0 धार्मिक मूल्य

स्तर	बी. एड. प्रशिक्षित	बी. एड. अप्रशिक्षित	योग
A	9	12	21
B	12	8	20
C	7	10	17
D	14	9	23
E	8	11	19
योग	50	50	100

तालिका क्रमांक 1.1

काई वर्ग (x2) परीक्षण	
काई वर्ग (x2) मूल्य	3.416
स्वतंत्रता का स्तर	4
सार्थकता का मान	0.491

उपर्युक्त सारणी के अनुसार बी. एड. प्रशिक्षित शिक्षकों में सबसे अधिक आवृत्तियाँ (D) औसत स्तर के कम पर 14 प्राप्त हुई एवं अप्रशिक्षित शिक्षकों में सबसे अधिक आवृत्तियाँ (A) उच्च स्तर से अधिक पर 12 प्राप्त हुई। उपर्युक्त सारणी के अनुसार 4 स्वतंत्रता के स्तर पर काई वर्ग (X2) मूल्य 3.416 पाया गया एवं इसके सार्थकता का मान 0.491 प्राप्त हुआ। जो कि 5% सार्थकता के स्तर पर सार्थक नहीं पाया गया। अतः शुन्य परिकल्पना Ho1 स्वीकृत की जाती है। अर्थात् बी. एड. प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित शिक्षकों के धार्मिक मूल्य में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है।

तालिका क्रमांक 2.0 सामाजिक मूल्य

स्तर	बी. एड. प्रशिक्षित	बी. एड. अप्रशिक्षित	योग
A	9	8	17
B	10	12	22
C	12	10	22
D	9	9	18
E	10	11	21
योग	50	50	100

तालिका क्रमांक 2.1

काई वर्ग (x2) परीक्षण	
काई वर्ग (x2) मूल्य	0.470
स्वतंत्रता का स्तर	4
सार्थकता का मान	0.976

उपर्युक्त सारणी के अनुसार बी. एड. प्रशिक्षित शिक्षकों में सबसे अधिक आवृत्तियाँ (C) औसत स्तर पर 12 प्राप्त हुई एवं अप्रशिक्षित शिक्षकों में सबसे अधिक आवृत्तियाँ (B) उच्च स्तर पर 12 प्राप्त हुई। उपर्युक्त सारणी के अनुसार 4 स्वतंत्रता के स्तर पर काई वर्ग (x2) मूल्य 0.470 पाया गया एवं इसका सार्थकता का मान 0.976 प्राप्त हुआ जो 5% सार्थकता के स्तर पर सार्थक नहीं पाया गया है। अतः शून्य परिकल्पना Ho2 स्वीकृत की जाती है । अर्थात् बी. एड. प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित शिक्षकों के सामाजिक मूल्य में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है।

तालिका क्रमांक 3.0 आर्थिक मूल्य

स्तर	बी. एड. प्रशिक्षित	बी. एड. अप्रशिक्षित	योग
A	15	9	24
B	13	7	20
C	9	5	14
D	8	15	23
E	5	14	19
योग	50	50	100

तालिका क्रमांक 3.1

काई वर्ग (x2) परीक्षण	
काई वर्ग (x2) मूल्य	10.836
स्वतंत्रता का स्तर	4
सार्थकता का मान	0.028

उपर्युक्त सारणी के अनुसार बी. एड. प्रशिक्षित शिक्षकों में सबसे अधिक आवृत्तियाँ (A) उच्च स्तर से अधिक पर 15 प्राप्त हुई एवं अप्रशिक्षित शिक्षकों में सबसे अधिक आवृत्तियाँ (D) औसत स्तर से कम पर 15 प्राप्त हुई। उपर्युक्त सारणी के अनुसार 4 स्वतंत्रता के स्तर पर काई वर्ग (x2) मूल्य 10.836 पाया गया एवं इसका सार्थकता का मान 0.028 प्राप्त हुआ जो 5% सार्थकता के स्तर पर सार्थक पाया गया है। अतः शून्य परिकल्पना Ho3 अस्वीकृत की जाती है अर्थात् बी. एड. प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित शिक्षकों के आर्थिक मूल्य में सार्थक अन्तर पाया गया है।

तालिका क्रमांक 4.0 ज्ञानात्मक मूल्य

स्तर	बी. एड. प्रशिक्षित	बी. एड. अप्रशिक्षित	योग
A	17	8	25
B	14	9	23
C	6	5	11
D	8	15	23
E	5	13	18
योग	50	50	100

तालिका क्रमांक 4.1

काई वर्ग (x2) परीक्षण	
काई वर्ग (x2) मूल्य	10.104
स्वतंत्रता का स्तर	4
सार्थकता का मान	0.039

उपर्युक्त सारणी के अनुसार बी. एड. प्रशिक्षित शिक्षकों में सबसे अधिक आवृत्तियाँ (A) उच्च स्तर से अधिक पर 17 प्राप्त हुई एवं अप्रशिक्षित शिक्षकों में सबसे अधिक आवृत्तियाँ (D) औसत स्तर से कम पर 15 प्राप्त हुई। उपर्युक्त सारणी के अनुसार 4 स्वतंत्रता के स्तर पर काई वर्ग (x2) मूल्य 10.104 पाया गया एवं इसका सार्थकता का मान 0.039 प्राप्त हुआ जो 5% सार्थकता के स्तर पर सार्थक पाया गया है। अतः शून्य परिकल्पना Ho4 अस्वीकृत की जाती है अर्थात् बी. एड. प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित शिक्षकों के ज्ञानात्मक मूल्य में सार्थक अन्तर पाया गया है।

परिणाम एवं व्याख्या

1. बी. एड. प्रशिक्षित शिक्षकों के धार्मिक मूल्य की सबसे अधिक आवृत्तियाँ (D) अर्थात् औसत स्तर से कम एवं बी. एड. अप्रशिक्षित शिक्षकों के धार्मिक मूल्य की सबसे अधिक आवृत्तियाँ (A) अर्थात् उच्च स्तर से अधिक पर प्राप्त हुई हैं। बी. एड. प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित शिक्षकों के धार्मिक मूल्य मे विभिन्न स्तरों पर सार्थक अन्तर नहीं पाया
गया।

2. बी. एड. प्रशिक्षित शिक्षकों के सामाजिक मूल्य की सबसे अधिक आवृत्तियाँ (C) अर्थात् औसत स्तर पर एवं बी. एड. अप्रशिक्षित शिक्षकों के सामाजिक मूल्य की सबसे अधिक आवृत्तियाँ (B) अर्थात् उच्च स्तर पर प्राप्त हुई हैं। बी. एड. प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित शिक्षकों के सामाजिक मूल्य मे विभिन्न स्तरों पर सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

3. बी. एड. प्रशिक्षित शिक्षकों के आर्थिक मूल्य की सबसे अधिक आवृत्तियाँ (A) अर्थात् उच्च स्तर से अधिक एवं बी. एड. अप्रशिक्षित शिक्षकों के आर्थिक मूल्य की सबसे अधिक आवृत्तियाँ (D) अर्थात् औसत स्तर से कम पर प्राप्त हुई हैं। बी. एड. प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित शिक्षकों के आर्थिक मूल्य मे विभिन्न स्तरों पर सार्थक अन्तर पाया गया। अतः बी. एड. अप्रशिक्षित शिक्षकों की तुलना में बी. एडप्रशिक्षित शिक्षकों में आर्थिक मूल्य अधिक हैं।

4. बी. एड. प्रशिक्षित शिक्षकों के ज्ञानात्मक मूल्य की सबसे अधिक आवृत्तियाँ (A) अर्थात् उच्च स्तर से अधिक एवं बी. एड. अप्रशिक्षित शिक्षकों के ज्ञानात्मक मूल्य की सबसे अधिक आवृत्तियाँ (B) अर्थात् औसत स्तर से कम पर प्राप्त हुई हैं। बी. एड. प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित शिक्षकों के ज्ञानात्मक मूल्य मे विभिन्न स्तरों पर सार्थक अन्तर पाया गया। अतः बी. एड. अप्रशिक्षित शिक्षकों की तुलना में बी.एड. प्रशिक्षित शिक्षकों में ज्ञानात्मक मूल्य अधिक हैं।

शैक्षिक सुझाव

1. प्रस्तुत शोध के परिणामों के आधार पर यह ज्ञात हुआ कि व्यक्तिगत मूल्य संबंधी शिक्षा के स्तर पर सुधार करने की आवश्यकता है।
2. धार्मिक मूल्यों के निर्माण हेतु सभी धर्मो का ज्ञान अनिवार्य रूप से शिक्षा में देना चाहिए ताकि सभी धर्मो के प्रति आदर उत्पन्न हो सके।
3. सामाजिक मूल्यों के निमार्ण हेतु सभी को सामाजिक कार्यो में सम्मिलित किया जाना चाहिए।
4. आर्थिक मूल्य के निर्माण हेतू अर्थ की महत्ता को बताकर फिजुल खर्च के दुष्परिणाम की जानकारी प्रदान करनी चाहिए।
5. ज्ञानात्मक मूल्य के विकास हेतु सभी को केवल किताबी ज्ञान न देकर ज्ञान के स्थायी रूप को प्रदान करना चाहिए। उन्हें प्रयोगों द्वारा वास्तविक ज्ञान दिया जाना चाहिए।

भावी अध्ययन हेतु शोध समस्याएं

1. शहरी एवं ग्रामीण प्राध्यापकों के व्यक्तिगत मूल्यों का अध्ययन करना।
2. बी,एड. एवं एम.एड. के प्राध्यापकों के व्यक्तिगत मूल्यों का अध्ययन करना।
3. बी.एड. एवं नॉन बी.एड. शहरी प्राध्यापको के व्यक्तिगत मूल्यों का अध्ययन करना।
4. ग्रामीण बी.एड. एवं नॉन बी.एड. प्राध्यापकों के व्यक्तिगत मूल्यों का अध्ययन करना।

संदर्भ

1. नायक, गोपाल प्रसाद (2009), मूल्यों के विकास में शिक्षण संस्थानों की भूमिका, परिपेक्ष्य–16, अंक–3, दिसम्बर 2009

2. पटेल भारती एवं सोमेजी भावना (2008), शासकीय एवं आशासकीय विद्यालयों की छात्राओं के नैतिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन, रिसर्च लिंक 50(ए), अंक–7(3) मई पृष्ठ 68 – 69

3. पासी, बी.के.एवं सिंह,पी (2009), वैल्यू एजूकेशन, एन.पी.सी., आगरा।

4. रूहेला, एस.पी. (2012), डायमेंशन ऑफ वैल्यू एजूकेशन, आगरा, एच.पी.भार्गव बुक हाऊस
5. शेरी, जी.पी.वर्मा एवं आर.पी. (2005) परसनल वैल्यू क्वेशचनायर (पी.बी.क्यू), एन.पी.सी., आगरा
6. सुमित्रासिंह, मैथिलीरमण (2009), वर्तमान शिक्षा के मूल्य संकट क्यों कारण एवं सुझाव,
7. परिप्रेक्ष्य, वर्ष 16, अंक 1, दिसंबर
8. साहनी, मधु (2009), माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के मूल्यों का अध्ययन, परिप्रेक्ष्य, वर्ष 16, अंक 2, अगस्त
9. मृदुला शर्मा (1995) विचाराधारा मूल्य और शिक्षा का पारस्परिक संबंध, परिप्रेक्ष्य, वर्ष 2 अंक 1
10. सुमित्रा सिंह, (2005) सामाजिक मूल्यों संस्थाओं और परम्पराओं पर भूमंडलीकरण का प्रभाव, परिप्रेक्ष्य, वर्ष 12 अंक 3
11. डॉ. गोविन्द प्रसाद शर्मा – ''उत्तर प्रौद्योगिकी काल और मूल्य आधारित शिक्षा''

Bhundiya Dipti Narendrabhai
M.A., M.A. in Education, B.Ed.
Primary Teacher , Degavada Primary School , Ta. Mahuva, Dist. Bhavnagar.